आज का पुरुषार्थ 17 Oct 2022

Source: BK Suraj bhai

Website: www.shivbabas.org

धारणा – “अपने बुद्धि को इतना स्वच्छ बनाये ताकि ज्ञान उसमें बस जाये .. मन बुद्धि को अपना दोस्त बनाये .. बातें करे उनसे ”

हम सभी ब्राह्मण कुलभूषणों का यह कितना बड़ा भाग्य है कि इस समय हम भगवान का प्यार और सम्मान प्राप्त कर सकते है। जीत सकते है।

जिन्हें हम युगों से प्यार करते आये, जिनके लिए हमारे मन में अथाह सम्मान था। वो अब हम महान आत्माओं को सम्मान देता है, प्यार देता है।

जरा देख ले अपने श्रेष्ठ भाग्य को। हम कितने भाग्य के धनी है? स्वयं भगवान के कितने समीप? उनके प्यार और सम्मान का पात्र !

पर उनके प्यार और सम्मान उन्हें ही मिलता है जो बहुत पवित्र है। अर्थात जिनके अंदर बहुत सच्चाई है, सफाई है। सफाई का अर्थ है अपने बुद्धि को स्वच्छ रखना।

कईयों ने जो अपने बुद्धि में गंदगी भर ली है तो ऐसी गंदगी से भरपूर वर्तन में ईश्वरीय ज्ञान ठहरता नहीं। इसलिए बाबा कहते ..

" बुद्धि के पात्र को सोने का बनाओ .. सम्पूर्ण पवित्र बनाओ "

हमें करना है बुद्धि को पूरी तरह से सफाई। लेकिन बहुत आत्माओं को इसकी कोई एवरनेस नहीं है। वह जो चाहे अपनी बुद्धि में भरते रहते है।

इसलिए अपने बुद्धि को आदेश दे देना है। कैसे?

" मैं आत्मा स्वराज्यधिकारी हूँ .. मन-बुद्धि की मालिक हूँ .. मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ "

इस **good feeling** में स्थित होकर अपने **मन-बुद्धि को आदेश दे** →

" हे मेरे बुद्धि .. तुम पवित्र हो .. तुम एक महान आत्मा की बुद्धि हो .. तुम श्रेष्ठ योगी की बुद्धि हो .. तुम्हे स्वच्छ होना है .. कोई भी गंदगी तुम्हे स्वीकार नहीं करनी है .. कोई भी गंदगी तुम्हारे पास आये .. उसे साथ साथ रिजेक्ट कर देना "

आप देखेंगे, जैसे भी हम कोई खराब बात पर हम विचार करेंगे हम स्वीकार करना चाहेंगे, बुद्धि उसको रिजेक्ट कर देगी, बाहर फेंक देगी।

हमें सच्चाई को भी अपनाना है। सच्चाई का अर्थ ..

" जो कुछ हम है, जैसे है .. बाबा के सामने स्पष्ट "

.. सच्चाई हमारी नेचर होनी चाहिए।

कई लोगों की नेचर होती है →

बात बात में झूठ बोलते रहना। विना मतलब भी झूठ बोल देना। झूठ बोलने को उन्होंने अपना **स्वभाव** बना लेते हैं। और इसे वह अपने बहुत **बुद्धिमानी** और चालाकी समझने लगते हैं।

ऐसी आत्मायें बाबा से बहुत दूर रहती हैं। **बाबा के प्यार** से वंचित रहती हैं।

.. कोई गलती हो जाती है वह बाबा के सामने स्पष्ट करे।

कईयों को ऐसा लगता है → " बाबा को कैसे बतायें? "

यदि आत्मायें बहुत योग्य हैं, उन्हें बताकर आप हल्के हो सकते हैं .. तो वह भी उचित है।

परन्तु यदि ऐसा नहीं है तो →

आप अपनी बात सीधी अपनी **परमपिता** से अपने परम सदगुरू से कर ले।

उनसे सीधा connection भी रखा जा सकता है। उनसे बहुत समीपता भी रखी जा सकती है।

लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि →

रोज हम गलती करते रहे और बाबा को बताते रहे ! इससे कोई फायदा नहीं होगा।

एक दो बार गलती हुई, बाबा को बताया। उनकी **दुआयें ली, क्षमा ली।**

और फिर उस गलती से सदा के लिए हम मुक्त हो गये।

ऐसी **धारणा** हम बनाते है तो सचमुच हमारी गलतियां भी हमारे लिए **वरदान** बन जाती है। और फिर हम अपने गलतियों से बहुत कुछ सीख कर अपने जीवन में निरन्तर आगे बढ़ते रहते है।

लक्ष्य तो हमारा और बाबा का यही है कि →

" हम सब आगे बढ़े "

नहीं तो बाबा क्यों कहते →

" अपनी गलती मुझे बताओ "

क्योंकि वह हमें इन सबसे मुक्त करके बहुत **शक्तिशाली** बना देना चाहता है। उनके मन में हमारे लिए यह बहुत श्रेष्ठ भावना है।

और अगर हम अपनी बात बाबा को बताते हैं तो ..

" बाबा की **current** हमें मिलती है "

.. वे विशेष रूप से अमृतवेले हमें सकाश देते रहते हैं ..

तो आज हम **विशेष अभ्यास करेंगे** →

" सूक्ष्म लोक में बाबा को देखेंगे, बापदादा को .. उनके मस्तक में शिवबाबा विराजमान .. और उनके मस्तक से किरणें निकलकर मुझ पर पड़ रही हैं "

.. अर्थात् वो मुझे अपनी सकाश प्रदान कर रहे हैं ।

॥ ओम शान्ति ॥

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org